WOMEN'S STUDIES CENTRE

Jesus and Mary College
University of Delhi

RESEARCH PROJECT

2020-21

दिल्ली-6 की मुस्लिम महिलाओं की उद्यमशीलता

(Entrepreneurship of Muslim Women of Delhi-6)

Prepared by :

Nandini Roy , Third year, Hindi honours
Pooja ,Third year,Hindi honours
Samiksha ,Third year,Hindi honours
Barkha ,Third year,Hindi honours
Reena Shukla,Third year,Hindi honours
Tejaswi , Second Year, Hindi Honours

Project mentored by:

Dr. Anupama Srivastava, Staff advisor, Women's Studies Centre, JMC

विज्ञप्ति

प्रमाणित किया जाता है कि विमेंस स्टडीज सेंटर, जीसस एंड मेरी कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा किया गया यह परियोजना कार्य विभिन्न पाठ्य-सामग्रियों और व्यक्तिगत रूप से एकत्र की जानकारी के आधार पर किया गया पूर्णत: मौलिक प्रयास है | इस शोध-अध्ययन में विशेष रूप से दिल्ली-6 के इलाके की मुस्लिम उद्यमशील महिलाओं और कारीगरों से किये गए औपचारिक और अनौपचारिक वार्तालाप और कुछ साक्ष्यों के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत किया गया हैं | इस कार्य में इन क्षेत्रों में फील्ड वर्क के दौरान इन महिलाओं के परिवेश और वातावरण को समझते हुए उनके तथा परिवार के लिए जीविकोपार्जन के लिए किये जाने वाले काम - काज़ के स्वरुप को जानने का प्रयास किया गया है | यह प्रयास "दिल्ली-6 की मुस्लिम महिलाओं की उद्यमशीलता" को अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में समझने और उनके प्रति कई पूर्वाग्रहों से अलग नज़रिए को दर्शाता है |

नंदिनी रॉय

पूजा

समीक्षा

बरखा

रीना शुक्ला

तेजस्वी

(अध्ययनकर्ता छात्र, विमेंस स्टडीज सेंटर, जीसस एंड मेरी कॉलेज)

डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव

परामर्शदाता, विमेंस स्टडीज सेंटर

जीसस एंड मेरी कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय

कृतज्ञता ज्ञापन

नंदिनी रॉय

सबसे पहले, मैं अपने शोधकार्य के लिए निरंतर समर्थन, उनके धैर्य, प्रेरणा, उत्साह और अपार ज्ञान के लिए अपने सलाहकार, डॉ अनुपमा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहतीं हूँ । उनके मार्गदर्शन ने मुझे मुस्लिम महिलाओं पर शोधकार्य के निष्कर्षों और लेखन में हर समय मदद की । मैं अपने शोध कार्य के लिए उनसे बेहतर सलाहकार और संरक्षक की कल्पना नहीं कर सकती हूँ । मेरी सलाहकार के अलावा मैं विमेंस स्टडीज सेंटर की संयोजिका डॉ. माया जॉन को भी धन्यवाद देना चाहतीं हूँ जिन्होंने हमें इस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया । मैं चाँदनी चौक और चावड़ी बाजार की मुस्लिम महिलाओं को भी तहे दिल से धन्यवाद देती हूँ जिनके बिना यह शोधकार्य अधूरा होता । उनके साथ बातचीत ने मुझे मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं को समझने में सक्षम बनाया |

समीक्षा

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मैं इस पूरी परियोजना के पीछे दो स्तंभों के प्रति अपनी गह री कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ-

हमारी सम्मानित प्रोफेसर डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव और सुश्री श्रेया मलिक |

मैं डॉ.अनुपमा श्रीवास्तव को हमारा कुशल मार्गदर्शन करने के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ | प्रारंभिक रिपोर्ट से लेकर अंतिम संपादन तक और इसके अलावा हमें आवश्यक सामग्री प्रदान कर ने के साथसाथ हमारे क्षेत्र के काम के लिए साक्षात्कार स्थापित करने के लिए |

मैं सुश्री श्रेया मलिक को भी धन्यवाद देना चाहूंगी जो हमारे शोध के प्रारंभिक चरण में हमारे सा थ थीं जब यह आकार ग्रहण कर रहा था |

अंत में, मैं महिला अध्ययन केंद्र, जेएमसी को धन्यवाद देना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे शोध दल का हिस्सा बनने का अवसर दिया | इस परियोजना में भाग लेना अत्यन सौभाग्य की बात है | इस कार्य को करते हुए यह सीखा कि कठिन समय में भी कड़ी मेहनत और मिलकर काम करने से हमें अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है |

परियोजना कार्य (विमेंस स्टडीज सेंटर)

दिल्ली-6 की मुस्लिम महिलाओं की उद्यमशीलता

अध्याय

परियोजना-परामर्शदाता की ओर से... (पृष्ठ संख्या : 5-6)

अध्याय 1 : भूमिका एवं विविध पाठ्य-सामग्रियों का विश्लेषण (पृष्ठ संख्या : 7-14)

अध्याय 2 : परिवेश (पृष्ठ संख्या : 15-19)

अध्याय 3 : व्यवसाय का स्वरुप (पृष्ठ संख्या : 20-26)

अध्याय 4 : चुनौतियाँ (पृष्ठ संख्या : 27-30)

अध्याय 5 : निष्कर्ष (पृष्ठ संख्या : 30-32)

सन्दर्भ (पृष्ठ संख्या : 33-35)

परिशिष्ट-1 (पृष्ठ संख्या : 36-38)

परिशिष्ट-2 **(** पृष्ठ संख्या : 39-43)

परियोजना-परामर्शदाता की ओर से...

जीसस एंड मेरी कॉलेज का विमेंस स्टडीज सेंटर लगातार स्त्रियों से सम्बंधित मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से चिंतन-विमर्श करता रहा है | इस प्लेटफार्म की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यहाँ अभिव्यक्ति की स्वंत्रता पर कोई हस्तक्षेप या पाबंदी नहीं है | इसके प्रत्येक प्रयास अपने-आप में विशेष केवल इसलिए नहीं है कि सलाना गतिविधियों का अनिवार्य हिस्सा होने के कारण उन्हें पूरा किया जाता है बल्कि इसलिए कि इससे जुड़े हुए सभी सदस्य आत्मीय भाव के साथ सभी विषयों के साथ संलग्न होते हैं और अपना पूरा योगदान दिल से देते हैं |

पिछले कुछ समय से देश में एक विशेष धर्म को लेकर बहुत कुछ सुनने और पढ़ने में कुछ ज्यादा ही सुनाई दिया...यदि समाज को मुकम्मल तौर पर समझना हो तो विभिन्न परिवेश और परिस्थितियों वाली महिलाओं की स्थिति की वास्तविक जानकारी बहुत ज़रूरी होती है | बस, इन्हीं प्रेरणाओं से इस विषय की उपज हुई | इस काम को करना काफी उत्साहवर्धक और रुचिप्रद रहा | विशेष रूप से इसके फील्ड वर्क में विद्यार्थियों ने नये अनुभव ग्रहण किये, एक अलग तरह की संस्कृति की वास्तविक खूबियों से वाकिफ हुए | उनके मस्तिष्क में अब तक मुस्लिम महिलाओं के प्रति अलग छवि और नज़रिया था जो इन उद्यमशील महिलाओं से बात करके बिलकुल बदल गया | इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य यद्यपि इन महिलाओं की उद्यमशीलता का ही अध्ययन करना था पर इसके परिणाम में कई बेहतरीन उपलब्धियां हमें हासिल हुई | इन महिलाओं की जीवन शैली को करीब से जानने का मौका मिला | इनके रिहाइश और परिवार की संरचना का पता चला | अन्य पाठ्य-स्रोतों से कामकाजी महिला, मुस्लिम महिला और दिल्ली-6 की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई |

लॉकडाउन के कारण हम इन छात्राओं से व्यक्तिगत रूप से कम ही मिल पाए | तीन-चार बार फील्ड वर्क के दौरान या तीन बार इनको अपने ही घर पर बुला कर परियोजना की कार्य-शैली को समझाया | खुशी इस बात कि है कि ऐसी स्थिति में भी इन विद्यार्थियों में कुछ ने संजीदगी और निष्ठापूर्वक काम किया | वैसे तो सभी ने अपने अपने स्तर पर इस कार्य को पूरा करने में अपना सहयोग दिया लेकिन नंदिनी रॉय और पूजा ने अपनी अतिरिक्त लगन और सहयोग से इस काम को पूरा किया | एक समय में यह लग रहा था कि फील्ड वर्क को कैसे पूरा किया जाए, उस समय इन दोनों छात्राओं की कार्य-शैली सराहनीय हैं | तेजस्वी और समीक्षा के साथ-साथ बरख और रीना ने भी समर्थ योगदान दिया |

सबसे बड़ा शुक्रिया शाहीन जी, महविश, सफीना, शबाना और सबीना के लिए क्योंकि इनके सहयोग के बगैर यह प्रोजेक्ट पूरा हो ही नहीं सकता था | इन्होने न केवल अपने अपने अनुभव साँझा किये बल्कि बिलकुल खुले दिल से हमारी खूब खातिर-तवज्जो भी की | इनके परिवार के सभी सदस्यों ने भी यथासंभव हमारे इस काम में सहयोग दिया | जिन ग़ालिब की शायरी में ज़िंदगी अपने मुकम्मल नक़्शे में दिखायी पड़ती है अगर आप वहाँ अचानक इस प्रोजेक्ट की जानिब से पहुँच जायें तो समझिये कि अब बहुत कुछ उम्दा ही होगा | बल्लीमारान की छोटी-छोटी तंग लेकिन बेहद खुशनुमा गलियों में हम शाहीन, महविश और शबाना जी मिलते हैं तो इन महिलाओं के व्यवसाय की कार्य-शैली और उनके परिवेश और परिस्थितियों के बीच जो ताना-बाना है,वह सहज ही समझ आने लगता है | वहाँ उनसे पूछे जाने वाले सवाल कहीं पीछे छूट जाते हैं और एक-एक चीज़ बड़ी ही सहजता से समझ आने लगती है | मिर्ज़ा ग़ालिब की संस्कृति से जिनका परिवेश रौशन हो और साथ ही जब बात आती है शाही अंदाज़ और नफ़ासत की और तरह तरह के मनभावन परिधानों की, जिनमें कूट-कूट कर लालित्य भरा हो और चेहरे की खूबसूरती और ताज़गी को और निखारने और चार चाँद लगाने वाले नुस्खों की, तो मुस्लिम संस्कृति का कोई सानी नहीं है | ज़ाहिर है कि ये महिलाएं अपनी विरासत से मिले कुशल हस्त-कला के रंगों-नूर से अपने जीवन को सँवारने में लगी हुई हैं | सभी विद्यार्थियों ने इन्हें खूब मन लगा कर परखा, समझा और फिर इनका विवेचन करने की सफल कोशिश की है | इस तरह से इस प्रोजेक्ट की कार्य-प्रक्रिया और परिणाम दोनों ही संतोषजनक रहे |

डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव
संकाय सलाहकार, विमेंस स्टडीज सेंटर
जीसस एंड मेरी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

परियोजना कार्य (डब्ल्यू. एस.सी.)

“दिल्ली-6 की मुस्लिम महिलाओं की उद्यमशीलता”

भूमिका एवं विविध पाठ्य-सामग्रियों का विश्लेषण

यह रिसर्च कार्य दिल्ली-6 में रहने वाली मुस्लिम महिलाओं के उद्यमशीलता पर केंद्रित है । जिसमें इन महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और सांस्कृतिक आयामों को समझते हुए उनके आय के स्रोतों को जानने का प्रयास किया गया है। इस कार्य को करने के लिए हमने शोध के लिए प्रमुख रूप से (feminist approach) फेमिनिस्ट दृष्टिकोण को ही प्रमुख रखा | विविध स्रोतों से उपलब्ध सामग्रियों को गुणात्मक प्रविधि के अनुसार ही नियोजित किया गया है | कई सामाजिक कार्यकर्ता के तथ्यों से हमें विशेष सहायता प्राप्त हुई और अध्ययन शुरू करने से पहले शोध-परक दृष्टि-निर्मित हुई | शोध का मुख्य केंद्र चुने गए क्षेत्र का कार्य (फील्ड-वर्क) ही रहा जिसके अंतर्गत विभिन्न महिलाओं से की गयी आत्मपरक बातचीत और उनसे मिलने के लिए उनके स्थान विशेष का दौरा करते हुए सजीव अनुभवों का चिरस्मरणीय अनुभव इस शोध-कार्य के कई स्थानों पर प्रस्तुत हुआ है | इस पूरे कार्य को को चार मुख्य विभागों में बांटा गया गया है :-

पहला- मुस्लिम एवं अन्य कामकाजी महिलाओं के सम्बन्ध में पहले से किये गए शोध कार्य और विश्लेषण : भारत और दिल्ली के कुछ इलाकों के सन्दर्भ में

दूसरा- इन महिलाओं के परिवेश की विशेषताएं और परिस्थितियों का मूल्यांकन

तीसरा- इनका व्यवसाय का प्रकार और उसकी जानकारी

चौथा- इनके कार्य में आने वाली चुनौतियाँ

दिल्ल -6 ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-आर्थिक-व्यवसाय की दृष्टियों से एक समृद्ध स्थान है | इसलिए इन महिलाओं का कार्य-क्षेत्र एक ऐसे स्थान से होने के कारण इस कार्य के माध्यम से हमें इनके जीवन से सम्बंधित कई नए आयामों का भी पता चलता है | यहाँ की संस्कृति का संबंध मुग़ल-काल से जुड़ा हुआ है तो ज़ाहिर सी बात है कि हमें इनके परिवेश और उसमें होने वाले कार्य के स्वरुप का ऐतिहासिक महत्त्व भी विदित हुआ | दिल्ली -6 का मुख्य स्थान या बाज़ार चाँदनी चौक है जहाँ कपड़े-गहने से लेकर गोटा-किनारी आदि तमाम व्यापार होते हैं | इसका ऐतिहासिक महत्त्व वर्तमान से कुछ इस प्रकार जुड़ता है |

चाँदनी चौक दिल्ली का सबसे पुराना और सबसे व्यस्त क्षेत्र है । यह भूमि सामाजिक-सांस्कृतिक आजीविका का संगम क्षेत्र है। इन बाज़ारों के इर्द-गिर्द ही आजीविका के स्रोत निर्भर है | इन बाज़ारों में सड़क विक्रेता और साप्ताहिक बाज़ार देखने को मिल जाते हैं जो कि आय के प्रमुख स्रोतों में से एक हैं। इन कार्यों की प्रमुख प्रवृति अनौपचारिक है। मुस्लिम महिलाओं का बड़ा तबका इसी अनौपचारिक क्षेत्र में संलग्न हैं जिसके कारण इनकी आय अपेक्षाकृत निम्न है जो इनकी वित्तीय स्वायत्तता पर प्रभाव डालती है। इन अनौपचारिक क्षेत्रों में भी घरेलू कामगार स्त्रियों की स्थिति और भी अधिक गंभीर है क्योंकि ये अप्रत्यक्ष रूप से कार्यरत है जिसके कारण किसी भी प्रकार की सरकारी व निजी राहत सेवाओं से वंचित रह जाती हैं।

इन महिलाओं के रोज़गार पर पारंपरिक तौर- तरीको के प्रभाव के कारण अक्सर घर से संचालित होने वाले व्यवसायों की अधिकता देखी जा सकती है | उदाहरण के तौर पर कसीदा-कढ़ाई , ब्यूटी पार्लर (Get Gorgeous), ड्रेस डिजाइनिंग बुटीक (सुहासना) इत्यादि | यहाँ कुछ महिलाएँ अब अपना स्व-रोजगार घर से बाहर भी सुचारु रूप से चला रही है | धीरे- धीरे इस संख्या में भी वृद्धि हो रही है | इनके काम-काज को समझने के लिए हमने दिल्ली-6 के कुछ इलाको का खुद जायज़ा भी लिया और उनसे सम्बंधित कुछ पाठ्य-सामग्रियों का अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित बिन्दुओं को समझा |

दिल्ली शहर का दिल चाँदनी चौक

आप जैसे ही पुरानी दिल्ली के चावड़ी बाज़ार के मेट्रो पर से साइकिल रिक्शा पर सवार होकर इन गलियों में से गुज़रते हैं मानो आप तेज़ भागती हुई महानगरीय ज़िन्दगी से एक अलग ही तरह के माहौल में पहुँच जाते हैं जहाँ कुछ ऐसे मंज़र देखने को मिलते हैं :-

“अली भैया की सुबह सुबह तंदूरी वाली चाय,

नाथु लाल के गरम- गरम समोसे ये तो अपने आप में खूबी है,

फोन पे कबूतर की बीट या बगल वाले अंकल की 4-5 टिशू और पानी वाला मीत,

सूट की दुकान और पुराने मकान

ये है दिल्ली-6 की पहचान ...”

अपने काम को अंजाम तक पहुंचाने के ज़रूरी था कि हम इस जगह के ऐतिहासिक महत्त्व को भी समझें | ऐसा क्या है इसके इतिहास में कि आज भी यहाँ उसी पुरानी दिल्ली की खुश्बू मिल जाती है जो कभी शाहजहाँ के वक़्त में रहा करती थी | दिल्ली शहर का मूल नाम कभी ‘शाहजहाँनाबाद’ भी रहा है और यह अब तक के दिल्ली के सात नामों वाले शहरों में सबसे छोटा है । बाज़ार का इतिहास राजधानी शाहजहाँनाबाद की स्थापना से शुरू होता है, जब सम्राट शाहजहाँ ने अपनी नई राजधानी के बगल में यमुना नदी के तट पर लाल किले की स्थापना की थी । हर बार एक नए शहर का जन्म हुआ । इसी से पुरानी दिल्ली अस्तित्व में आई । ऐतिहासिक ग्रंथों से पता चलता है कि यह शहर समृद्ध और पूर्ण भव्य था । चाँदनी चौक दिल्ली का सबसे पुराना एवं सबसे व्यस्त क्षेत्र है। यह पुरानी दिल्ली के सबसे व्यस्त बाजारों में से एक है । चांदनी चौक पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के नज़दीक स्थित है । लाल किला स्मारक बाजार के भीतर स्थित है । यह 17वीं शताब्दी में भारत के मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा बनाया गया था और इसका डिज़ाइन उनकी बेटी जहांआरा द्वारा तैयार किया गया था । चाँद की रोशनी को प्रतिबिंबित करने के लिए बाज़ार को नहरों द्वारा विभाजित किया गया था और यह भारत के सबसे बड़े थोक बाज़ारों में से एक बना हुआ है। 1560 दुकानों वाला यह बाजार मूल रूप से 40 गज चौड़ा और 1520 गज लम्बा था। यह बाजार आकृति में चौकोर था, तथा इसके केंद्र में एक ताल उपस्थित था, जो चांदनी रात में चमकता था,और इसी कारण बाजार का नाम चांदनी चौक

पड़ा था। सभी दुकानों को उस समय आधे चंद्रमा के आकार के पैटर्न में बनाया गया था, जो अब विलुप्त हो गया है | यह बाज़ार अपने चांदी के व्यापारियों के लिए प्रसिद्ध था, जिस कारण इसे "सिल्वर स्ट्रीट" के नाम से भी पहचाना गया है। चांदनी चौक पुरानी दिल्ली के मध्य में लाल किले के लाहौरी गेट से शुरू होकर फतेहपुरी मस्जिद तक विस्तृत है। इसी बाजार के नाम पर आस पास के क्षेत्र को भी चांदनी चौक कहा जाता है। एक नहर किसी समय में सड़क के बीच में बहती थी और चौक के तालाब में जल भरा करती थी। चांदनी चौक एक समय में भारत का सबसे बड़ा बाजार था। 1903 में दिल्ली-दरबार के आयोजन के समय इस परंपरा को पुनर्स्थापित किया गया था। चौक के तालाब को 1950 के दशक तक एक घंटाघर के रूप में पुनर्स्थापित कर दिया गया था। इसी कारण बाजार का केंद्र अभी भी घंटाघर के नाम से जाना जाता है। पुरानी दिल्ली सामाजिक-सांस्कृतिक आजीविका का संगम केंद्र था। ऐसा महान शहर एक महान सांस्कृतिक समृद्धि का शहर भी था। पुरानी दिल्ली सामाजिक-सांस्कृतिक आजीविका का संगम केंद्र था। शहर की जीवित परंपराएं जैसे हिंदू- मुस्लिम समग्र संस्कृति, त्योहारों का एक साथ उत्सव, पतंगबाजी के पुराने रीति-रिवाज़ और कबूतर उड़ाना और विविध व्यंजन पीढ़ी दर पीढ़ी चलते गए | यहाँ मिली जुली संस्कृतियों की अदम्य भावना का योग हैं। भीड़-भाड़ वाले पूजा-स्थल, दुकानों और बाज़ारों में भोजनालयों से उड़ती सुगंध और कसीदाकारी से लगते उर्दू जुबां के सुलेख मानो जीवंत हो कर यहाँ के भवनों और दीवारों को सुसज्जित कर रहें हैं |

पटरी और रेहड़ी पर चलने वाले व्यवसाय

भारतीय अर्थव्यवस्था मे पटरी विक्रेता एक अहम् भूमिका निभाते है। भारत एक विकासशील देश है जिसमें शहरी औपचारिक व्यवसाय और अनौपचारिक काम-काज के मध्य सामंजस्य ज़रुरी होता है ताकि अशिक्षित वर्ग के लोग भी अपनी जरूरत और दो वक्त की रोटी पाने के लिये सामानों को सड़क के किनारे बेचकर अपना गुज़ारा चला सके | इसमें महिलाएं भी अपना पूरा योगदान देती हैं | जो गरीब या निम्न वर्ग की महिलाएं होती है वो ज्यादातर सड़क विक्रेता का कार्य करती हैं | इसका मुख्य कारण एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरण भी है क्योंकि ज्यादातर लोग कार्य की तलाश मे गाँव से शहरों की तरफ अग्रसर हो रहे हैं, परन्तु शहर मे भी वह या तो किसी निर्माण कार्य मे या फिर सड़क पर पटरी विक्रेता के रूप में नज़र आते हैं।

इनके अलावा इनके घर की औरतें भी इस काम में अपना योगदान दे कर अपने घर का खर्चा सुचारु रूप से चलाती हैं |

ज़्यादातर महिलाएं इन कार्यों मे अपने पति का साथ देती है या फिर अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए भी यह काम करती है, जिससे वह अपने बच्चों को ठीक से पाल सके। भारत मे सडक़ विक्रेताओ मे अधिकतर पुरुष ही देखने को मिलते है। क्योंकि वह बोझ उठाने, सामान बेचने ओर अन्य तरीकों से उपभोक्ताओं को लुभाने मे सक्षम होते है। दिल्ली मे 300 से अधिक दुकानें सरकार के रिकॉर्ड में दर्ज है जो मुख्य रूप से पुरानी दिल्ली मे आज भी स्थित है। इन कार्य क्षेत्रो में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी भी देखने को मिलती है। सिलाई-कढाई हो या ,कसीदा-किनारी हो या स्टोन-वर्क या फिर बिंदी और कुंदन का काम, आज भी इन कार्यों में मुस्लिम महिलाओं की दक्षता का कोई सानी नहीं है |

भारत में महिला अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक और कोविड -19

भारत में अधिकांश मुस्लिम महिलाएं आय की दृष्टि से निम्न एवं कम सुरक्षित है | वे अधिकतर अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं । इन महिलाओं को विभिन्न सामाजिक, पारिवारिक ,आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है | 91% घर से काम करने वाले और 86% अपशिष्ट बीनने वालों ने कहा कि लॉकडाउन ने उनकी कमाई पर भारी प्रभाव डाला। इसी प्रकार वे महिलाए जो घर से काम करती है उन्होने बताया की कारखानों के बंद होने के कारण भुगतान को रोक दिया गया और उनकी आय में काफी गिरावट आई |

अनौपचारिक उद्यमों और श्रमिकों पर लॉकडाउन-राहत उपायों का प्रभाव : घरेलू कामगार

घरेलू कामगार अनौपचारिक श्रमिकों के बीच सबसे अदृश्य और परिणामस्वरूप कमजोर समूह हैं | न तो उनकी कोई पहचान है और न ही वे अपने लिए कोई आवाज़ उठा सकने के काबिल ही हैं | यह स्पष्ट था क्योंकि राहत उपायों में उनके लिए कोई जगह नहीं थी | घरेलू श्रमिकों और अन्य अनौपचारिक श्रमिकों द्वारा सामना की जाने वाली अन्य समस्याएं पर्याप्त राशन नहीं था, उनमें से केवल कुछ श्रमिकों को सरकार से मुफ्त राशन और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्राप्त होता हुआ | इनमें से कई महिला श्रमिकों को घरेलू हिंसा का सामना भी करना पड़ा, जो घर में सीमित रह गयी थीं | ऐसी महिलाएं घरेलू संसाधनों में योगदान करने में असमर्थ थीं |

“आएशा कुंदुरी के एक शोध-कार्य के अनुसार “ बाहर जाकर काम करने से अच्छा घर बैठ कर काम करना है”

इस शोध-प्रपत्र में महिलाओं के विशेष प्रकार के भुगतान किए गए कार्यों में प्रवेश करने के निर्णय को समझने का प्रयास किया गया है। फेमिनिस्ट दृष्टि के आधार पर हुए भौगोलिक स्तर के अध्ययनों की एक विस्तृत श्रृंखला से पता चलता है कि महिलाएं ऐसे घरों में कैसे सीमित हैं, जहाँ उनको बाहर जाने की अनुमति नहीं है । परिवार से मिलने वाला सम्मान और कार्य-क्षेत्र के सम्मान के कई मायने हैं | कारखानों जैसे पारंपरिक कार्यस्थलों से बचने और घर से काम करने के अपने विकल्पों को आकार देने में गहराई से ये महिलाएं योगदान देती हैं, आगे उनकी स्थिति को द्वितीयक अर्जक के रूप में सुदृढ़ करते हैं। घर से बाहर जाना प्रतिबंधित हैं | इन महिलाओं के लिए बाहर के काम की तुलना में घर के काम ज्यादा महत्व रखते हैं | अनौपचारिक क्षेत्र में काम के तीन रूप, जैसे कि घर में रह कर काम करना, किसी दूसरे के घर काम करना और कारखानों/कार्य-क्षेत्र में काम करना | इन सभी प्रकारों में महिलाओं के लिए अलग-अलग प्रकार से लाभ के अवसर होते हैं जिनकी सहायता से वे उन समस्याओं का निदान करने में भी सक्षम होती हैं जो किसी न किसी प्रकार से उनके आत्म-सम्मान को चोट पहुंचाती हैं | इस कार्य में यह पाया गया कि उनके भीतर एक विशेष प्रकार का काम करने का निर्णय लेने की क्षमता का विकास होना भी ज़रूरी है | ऐसी स्थिति में जो महिलाएं घर से अपना काम करती हैं अपेक्षाकृत कार्य से सम्बंधित निर्णयों को लेने में अधिक समर्थ होती हैं | अपने फील्ड-वर्क के अनुभवों में भी हमने इस बात को सही पाया |

घरेलू कामगरों के रूप में महिलाओं के अधिकारों का ध्यान रखते हुए उन्हें उनके प्रति जागरूक करना : भारत में ‘स्व-नियोजित महिला संघ-सेवा’ की भूमिका :-

Self Employed Women's Association (Sewa) एक राष्ट्रीय श्रमिक संघ है जो अनौपचारिक अर्थव्यवस्था भारत में महिला श्रमिकों को संगठित करता है। सेवा स्व-नियोजित महिलाओं को सामूहिक रूप से अपने स्वयं के विकास को बढ़ावा देने में सहायता करता है। ये ट्रेड यूनियनों और संघों का रूप ले सकते हैं जो रोज़गार को बढ़ावा देते हैं और आय में वृद्धि करते हैं या जो महिला-श्रमिक-उत्पादकों को बाज़ार से जोड़ते हैं।

'सेवा' चार दशकों से महिलाओं को संगठित कर रहा है और यह विश्व के पहले संगठन में से एक था, जो गृह आधारित श्रमिकों पर ध्यान केंद्रित करता है - दोनों विश्व स्तर पर और राष्ट्रीय रूप से भी । इस संगठन ने घर पर आधारित कार्यकर्ता का समर्थन करने के लिए 'सेवा' रणनीतियों का निर्माण किया जिससे कार्य स्थल के रूप में घर-घर में सुधार हुआ |

निष्पक्ष श्रम नियमों और समावेशी सामूहिक सौदेबाजी के लिए लड़ना:-

होमबेड श्रमिक आम तौर पर बहुत कम कमाते हैं विशेष रूप से होमवर्कर्स जिन्हें एक टुकड़ा दर (बहुत कम दर) पर भुगतान किया जाता है और जो अक्सर काम और मजदूरी के लिए बिचौलिए पर निर्भर होते हैं | जो भी वस्तु का उत्पादन किया जाता है, आश्रित गृह श्रमिक केवल एक छोटा प्रतिशत कमाते हैं | बिक्री मूल्य 2 से 5% तक कम है जबकि नियोक्ता व्यापार और उसका अनुबंध का उच्चतम प्रतिशत केवल 40% है । अधिकांश श्रमिक चाहे वे आश्रित हों या स्वतंत्र दोनों ही की आमदनी और आय में उतार-चढ़ाव होता है । अतिरिक्त काम करने पर आमतौर पर श्रमिक लाभान्वित नहीं होते हैं जैसे कि भुगतान, छुट्टी, विच्छेद-नोटिस या बोनस इत्यादि में उनकी आय में हानि होती है । इसके अलावा पेंशन और भविष्य निधि में केवल कुछ ही नियोक्ता को दुर्घटना बीमा द्वारा कवर कर के योगदान मिलता है | स्वयंसेवी संस्था SEWA की शांतिपूर्ण रणनीतियों के कारण बातचीत अक्सर नियोक्ता ठेकेदारों और व्यापारियों के साथ आमने-सामने होती है।

समीरा खान (रिपोर्टर) की केस-स्टडी : महिलाओं की पहचान : आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से

लोग हमें हमारे पहनावे के आधार पर पहचानते है। मुस्लिम महिलाओं की पोशाक **रिधा** जो अपने आप में विशेष है परन्तु कुछ लोग इसे एक अलग ही नज़र से देखते हैं । 'समीरा खान' के आर्टिकल के अनुसार कॉलेज में पढ़ने वाली 16 वर्ष की मध्यम परिवार की दाउदी बोहरा लड़की अमीना भीड़ वाली जगहों में सुरक्षित महसूस करती है क्योंकि लोग उसके **रिधा** पहनने के कारण उससे थोड़ी दूरी बनाकर रखते हैं। अतः मुस्लिम महिलाओ को उनकी पोशाक के कारण लोग अलग नजरिए व जिज्ञासा से देखते हैं। जिस वजह से मुस्लिम महिलाओं को नए लोगो से मिलने नई जगहों पर जाने में हिचकिचाहट महसूस होती है।

इसके साथ ही कुछ महिलायें जोकि आत्मनिर्भर व वयस्क हैं उन्हें भी बाहर घूमने की आजादी प्राप्त नहीं होती । समीरा खान के आर्टिकल के अनुसार तसनीम जोकि 28 वर्ष की डॉक्टर है और बड़े अस्पताल में कार्यरत हैं उन्हें शायद ही कभी अपने दोस्तों और सहकर्मियों के साथ किसी पार्टी, पिकनिक में जाने की अनुमति मिली होगी।इस प्रकार से हम देखते है कि मुस्लिम महिलाओं को अन्य दूसरी महिलाओं के समुदाय की तरह ही विभिन्न प्रकार की पाबन्दियों का सामना भी करना पड़ता है, इतनी सारी पाबंदियों के बीच में इन महिलाओं के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास नहीं हो पाता। मुस्लिम महिलाओं को अन्य दूसरी महिलाओं की तरह पितृ सत्तात्मक दुनिया की संकीर्ण सोच का सामना भी करना पड़ता है।

समीरा खान के आर्टिकल के अनुसार मुस्लिम महिलाओं को उनके परिवार के द्वारा कई तरह के प्रतिबन्ध झेलने पड़ते है, हांलाकि कुछ मुस्लिम परिवार ऐसे भी है जो महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करवाने और महिलाओं को रोजगार करने देने में विश्वास रखते है, पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी महिलाओं को अपनी पसन्द का रोज़गार चुनने की आज़ादी प्राप्त नहीं होती, वे केवल वही रोज़गार चुन सकती हैं जिसमें ज़्यादा देर तक घर से बाहर ना रहना पड़ता हो जैसे, वे एक अध्यापिका बन सकती है पर एक पत्रकार नहीं ।

इसके साथ ही कुछ महिलाओं को तो घर से बाहर जाकर काम करने की इजाज़त भी नहीं मिलती और अगर उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तब भी उन्हें घर में रहकर ही काम करना होगा जैसे, सिलाई का काम इत्यादि । इसके साथ ही कुछ महिलाओं को उनके परिवार की तरफ से कई और प्रतिबन्ध भी सहने पड़ते है। उन्हें ऐसे किसी भी स्थान में जाने की इजाज़त नहीं होती जहां पर पुरुष भी उपस्थित हो अर्थात अगर कोई महिला जिम जाना चाहती है तो वह केवल लड़कियों के जिम में जा सकती है और अगर पढ़ना चाहती है तो वह सिर्फ लड़कियों के विद्यालय या कॉलेज में पढ़ सकती है।

मुस्लिम महिलाओं की सुरक्षा की बात करें तो मुस्लिम महिलाएं भी अन्य दूसरे समुदाय की महिलाओं की तरह सड़क पर असुरक्षित महसूस करती हैं, कुछ मुस्लिम महिलाओं के अनुसार बुर्के में होने के बावजूद भी वे खुद को सड़क के उत्पीड़न से नहीं बचा पाई तो कुछ के अनुसार महिलाओं ने बुर्के में होने के कारण कुछ जगहों पर खुद को सुरक्षित महसूस किया।

अतः इन बातों से स्पष्ट है कि मुस्लिम महिलाओं को पितृसत्तात्मक सोच से जूझना पड़ता है, उन्हें कई पाबंदियों का सामना करना पड़ता है और अन्य दूसरी महिलाओं की तरह वे भी सुरक्षा से संबंधित समस्याओं से समस्याओं से जूझती है।

परिवेशगत विशेषताएं

स्थानीय

पुरानी दिल्ली का लगभग पूरा इलाका भीड़-भाड़ को ही परिभाषित करता है | कई मुस्लिम महिलायें इसी परिवेश में अपना जीवनायापन कर रही हैं | इस स्थान की अपनी विशिष्ट संस्कृति है | अपने फील्ड वर्क के दौरान हमने इन मुस्लिम महिलाओं के परिवेश को समझने की कोशिश की | उनके व्यवसायों और उनकी स्थिति को समझने के लिए उनसे की गई मुलाक़ात के अनुभव इस कार्य को सफल बना पाये | योजनानुसार हम चावडी बाज़ार गए एवं हमने वहाँ से ई-रिक्शा लिया और ग़ली-ए-कासिम जान पहुंचे | जहां हर वर्ग हर लिंग अपने में ही एक अलग ही मिसाल हैं | बहुत संघर्ष चुनौतीपूर्ण भरा समाज और कुछ लोगों की प्रेरणा हमे आगे चलने की हिम्मत देती है इसी कठिनाई भरी राह और चाह की पहचान है हमारी **शाहीन** बेगम जिनकी उम्र 54 वर्ष की है | हम पहले गली मीर कासिम-जान में से होती हुई एक पतली-सी गली में गए | वहाँ सोच ही रहे थे कि ये पतले और सँकरे रास्ते हमे कहाँ लेकर जाएंगे लेकिन अचानक एक टूटे-फूटे दरवाजे से होते हुए जब हम आँगन पहुँचे तब हम हैरान रह गए कि इस जगह पर इतना बड़ा विशालकाय आँगन भी हो सकता है | फिर वहाँ पर हमने सामने भव्य इमारत देखी जो जीर्ण अवस्था में थी और वहाँ शाहीन बेगम रहती थी | उनके रिहाइश एक ज़माने में गालिब के ससुराल-पक्ष के परिवार की थी | इसी गली में 'ग़ालिब की हवेली' भी है

जिसे 27 दिसंबर 2011 में Indian Council for Cultural Relation और दिल्ली सरकार ने ग़ालिब अकादमी और ऐवान-ए-ग़ालिब के सहयोग से मिर्ज़ा ग़ालिब के जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों की तथ्यपरक जानकारी देती हुई ऐतिहासिक ईमारत के रूप में संरक्षित किया गया है | शाहीन इसी जगह पर एक विदेशी उत्पाद ओरिफ्लेम की रिटेल विक्रेता के रूप में अपना काम बड़ी अच्छी तरह से कर रही हैं | उनका इस इलाके में बहुत रसूख है जिसके कारण उनके साथ अन्य कई महिलाएं इस काम में संलग्न हैं |

हमने **महविश** जिनकी उम्र लगभग 34 वर्ष है, बल्लीमारान में 152 इमली वाला फाटक, राबिया गर्ल्स स्कूल के पास, गली कासिमजान, दिल्ली 110006 अत्यधिक सफल **ब्यूटी पार्लर** (**Get Gorgeous**) चला रही है । तंग गलियो के भीतर शांत इलाके के बीच में यह अपना छोटा-सा व्यवसाय सफलतापूर्वक चला रही है | अपना यह काम एक ऐसी जगह चला रही हैं जिसका क्षेत्रफल बहुत ही छोटा (लगभग 5ft/3ft का कमरा) है | फिर भी वे इसे सफलतापूर्वक संचालित कर रही है | इस कमरे में दो ब्यूटीपार्लर वाली कुर्सियां, एक मसाज बेड, एक बड़ा शीशा और एक छोटे-से सिंक के बाद ज्यादा जगह नहीं बचती है | महविश के पास उस इलाके की कई महिलाएं अपने रोज़मर्रा के सौन्दर्य प्रसाधनों के लिए लगातार आती रहती हैं | शेहनाज़ हुसैन के स्कूल की तालीम लेकर महविश अपनी 12 साल की बेटी, जो हेल्थ केयर इंडस्ट्री में अपना करियर बनाना चाहती है के लिए एक बहुत ही उम्दा तालीम और माहौल उसे प्रदान करती हैं | इस ब्यूटीपार्लर के साथ ही जूते की बड़ी-सी थोक की दुकान भी है जो ज़रूरत पड़ने पर सहायता करते हैं | यूं तो समूचे बल्लीमारान की गलियाँ अनगिनत दुकानों से सुसज्जित हैं पर महविश के इस गुलाबी रंग के बार्बी-डॉलनुमा ब्युटीपार्लर ने हम सभी का मन मोह लिया |

ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव सभी के लिए होते हैं | कुछ तो इनसे हार मान लेते हैं तो कुछ उलझ के रह जाते हैं, कुछ ज़िन्दगी को कोसते रहते हैं तो कुछ **'शबाना'** जैसे होते हैं जो यह साबित करते हैं कि मेहनत और लगन से कुछ भी हासिल किया जा सकता है | ज़रुरी नहीं कि सभी सुविधायें मिले लेकिन जितनी मिले, उन्हीं को अपना सब कुछ मानकर अपना और अपने बच्चों को न केवल पढ़ाना लिखाना बल्कि एक-से-एक अच्छी नौकरियों का मिलना,वह भी केवल अपने बल-बूते पर | शबाना वो शख्सियत हैं जिनके पति का स्वर्गवास तब हो गया जब उनके बच्चे बहुत ही कम उम्र के थे | इनसे हमारी मुलाकात महविश के ब्यूटीपार्लर में होती है | शबाना जी का

स्वयं का व्यवसाय नहीं है बल्कि वह एक कारखाना जिसमें शादी-ब्याह या पार्टी में पहने जाने वाले परिधानों पर स्टोन लगाया जाता है, में श्रमिक के रूप में कार्य करती है | कारख़ाना बहुत भीड़-भाड़ वाले इलाके में है और शबाना जैसी और भी अन्य स्त्रियाँ वहाँ श्रमिक के रूप में कार्यरत है | दिल्ली-6 का यह इलाका साइकिल रिक्शा, ठेलों और दुपहिया स्कूटरों के हॉर्न से गुंजायमान रहता हैं | यहीं पर वे सुबह से लेकर शाम तक अपने काम में मसरूफ रहती हैं |

ऎसी ही एक महिला शाहिदा हैं जो सिलायी करके अपने परिवार के लिए कुछ आमदनी करती हैं | इनका काम का क्षेत्र लाल-कुआँ के पास गली चाबुक सवार के तंग से वातावरण में हैं जहाँ मुश्किल से सूरज की रौशनी भी पहुंचती है | इनका व्यक्तिगत जीवन बहुत संघर्षमय है पर फिर भी ये अपने काम को किसी तरह करती रहती हैं |

जीवन शैली

पारिवारिक

हम पहले शुरुआत करते हैं **शाहीन** से | शाहीन उस मुस्लिम परिवार से संबन्धित है जिनका पैतृक घराना मूल रूप से दिल्ली से ही संबन्धित है | चावड़ी बाज़ार का यह इलाका इन्हीं मुस्लिम वर्ग से संबन्धित है | इन मुस्लिम परिवारों की एक विशिष्ट संस्कृति है जो इस इलाके के ताने-बाने को बुनती है | शाहीन जी के परिवार में चार सदस्य है | वे खुद एक शिक्षित मुस्लिम महिला हैं | अपना काम भी ये बखूबी चलाती हैं, फिर भी इनके कई फैसलों पर परिवार का हस्तक्षेप देखने को मिलता है | उनके दोनों बेटे अच्छी शिक्षा हासिल कर रहे हैं | उनसे हुई बातचीत से यह पता चलता हैं कि उनके कार्य सम्बंधित फैसलों में परिवार की राय की एक अहम भूमिका रहती है |

अगला इंटरव्यू हमने **शबाना** का किया | इनकी उम्र 40 वर्ष है | इनके पति की मृत्यु हो चुकी है लेकिन इतनी कठिनाई के बाद भी उन्होने एक लड़की को गोद लिया एवं उसे पढ़ा भी रही है | उनका मानना है की जहाँ उनके परिवार में तीन रह रहे है वह पर एक और क्यों नहीं | घर का

खर्च खुद उठाती हैं । इनका एक लड़की और दो लड़के है । लड़की का नाम समायरा हैं और 10वीं क्लास की छात्रा हैं, एक लड़का होटल मैनेजमेंट और दूसरा लड़का एडिटिंग का कोर्स कर रहा, एडिटर हैं | शबाना ,के आंखों से कम दिखने की वजह से बेटी के साथ मिल के काम कर लेती हैं |

सफ़ीना दक्षिणी दिल्ली के भगवान् नगर के मार्केट में 'सुहासना' नामक बुटीक सफलतापूर्वक चला रही है | अपने कपड़ों के लिए कपडा, गोटा-किनारी वे इसी दिल्ली-6 के 'चितली कब्र-गेट न.एक-जामा मस्जिद' बाज़ार से लाती हैं | सफ़ीना बताती हैं कि इनके परिवार में थोड़ी बंदिशे थी जैसे मॉडर्न कपडे नहीं पहन सकतीं थीं और बाहर जाने के लिए पाबंदी थी। पढ़ाई में कोई रोक टोक नही थी | इनके परिवार में औरतों को काफी इज़्ज़त दी जाती है । इनके पति ने हमेशा इनके काम में बढ़-चढ़ कर सहायता की | इनके परिवार ने हमेशा इनके व्ययसाय के लिए आर्थिक रूप से भी मदद की | सफीना आगे बतातीं हैं कि उनके स्व-रोज़गार की सफलता का पूरा श्रेय उनके परिवार वालों को ही जाता है विशेष रूप से उनके पति को जो हर मोड़ पर उनके साथ खड़े रहे |

सबीना हस्तशाल कृष्ण कॉलोनी में छोटा सा सिलाई का काम करती है | यह कार्य वह अपने घर से संचालित करती है | ये भी अपने काम से सम्बंधित सामग्री चांदनी चौक से लेकर अपना काम करतीं हैं | इनके परिवार में चार सदस्य है | सबीना 20 वर्ष की है ओर सबीना के अलावा इनके पापा(ऑटो चालक) कमाते हैं | सबीना को घर से बाहर जाने का पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है , घर से बाहर जाने में परिवार वालो की ओर से बंदिशे देखने को मिलती है | कई बार बाहर आने जाने पर उसका छोटा भाई भी उसके साथ आता-जाता है | परिवार की परम्पराएं मुस्लिम धर्म के अनुरूप ही है |

सामाजिक

इन महिलाओं के काम-काज पर इनकी सामाजिक स्थिति का बड़ा प्रभाव पडा है | शाहीन जी का विवाह कम उम्र में हुआ, घर से बाहर भी जाने की इतनी हिम्मत नहीं होती थी | काम जब शुरू किया था तो ननद और बहन के साथ बाहर जाती थी । घर में यही पहली महिला थी जो घर से बाहर काम के लिए निकली थी पर इसके बावजूद आज वह सुदृढ़ स्थिति में हैं और अपने काम

को चला रही हैं | बल्लीमारान इलाके में वहाँ की महिलाओं के लिए सभी ज़रूरी इंतजाम दिखाई दिए जब हम एक राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता से मिले जो शाहीन जी के बहन के पति हैं | उन्होंने बताया कि उस क्षेत्र में महिलाओं की ज़रूरत के पूरी सहायता की जाती है, जैसे राशन और आधार कार्ड आदि |

सुहासना बुटीक चलाने वाली सफीना को अपने घर में पूरा साथ मिलता है | वे अपना काम भी सुचारू रूप से चला रही हैं | पर उन्हें कभी-कभी समाज की संकीर्ण सोच का शिकार होना पड़ता है जब उन्हें किराए के लिए घर चाहिए होता है तो | दिल्ली राजधानी के अन्दर अभी भी कुछ लोगों की सोच मुसलामानों को लेकर सीमित है | यद्यपि उन्हें अपने मार्केट में सभी का सहयोग मिलता है लेकिन कभी-कभी उन्हें इस भेद-भावपूर्ण मानसिकता का शिकार होना पड़ता है | इन महिलाओं में कुछ के ऊपर सामाजिक-रूढ़ियाँ अपना कुप्रभाव डाले हुए हैं तो कभी वे खुद ही उनको मानती हैं | पति की मौत होने पर शबाना न अच्छे कपडे पहनती हैं और न मेकअप करती हैं | शाहिदा अपने पति के बुरे व्यवहार को सहने पर विवश है पर उनकी बेटी दिल्ली विश्वविद्यालय से टीचिंग कोर्स करके अपने काम को तलाश रही है | किसी परिवार में महिलाएं बहुत खुशनुमा माहौल में वक़्त गुज़ार रही हैं | महविश के परिवार के साथ-साथ सभी मित्र उनके काम में बड़ी सहायता करते हैं | उनकी बेटी दिल्ली शहर के एक बड़े स्कूल में पढती है | स्थिति चाहे जैसी भी हो ये सभी अपने उद्यम सफलतापूर्वक कर रहीं हैं |

व्यवसाय का स्वरूप

शाहीन बेगम Oriflame Sweden Cosmectics में वितरक का काम करती है | Oriflame स्वीडन एक कोसमेकटिक्स ब्रांड हैं इनके प्रोडक्टस ओरगनिक होते हैं|इनके प्रोडक्टस के डिमांड मैं लिपस्टिक्क्स,सोप, टेलकम, हनी-मिल्क क्रीम और फ़ेश्यल आदि के प्रोडक्टस आते हैं | Oriflame Sweden एक विदेशी ब्रांड होते हुए भी भारत में इसके प्रोडक्टस की अच्छी बिक्री होती है क्योंकि अपने इलाके में इनका बहुत रसूख है | किसी भी व्यवसाय में अच्छा व्यवहार और रसूख बहुत काम आता है | शाहीन जी के कहने पर ही वहाँ की अधिकतर महिलाएं इन प्रोडक्टस की गुणवत्ता पर विश्वास करती है और इससे इनकी आय जाती है | इनकी आमदनी

रु.6000 से रु.9000 रुपये तक है | इनके परिवार में कोई बंदिश नहीं थी | यह अपने बल बूते लगभग 22 सालों से इस काम को करते हुए न केवल वे अपने पैरो पर खड़ी है बल्कि अपने परिवार की आर्थिक सहायता भी कर रही है | काम में लगने से पहले Oriflame के डेमो में जाया करती थी, पड़ोसी से डेमो के बारे में पता चला था। ओखला फेज -1 में डेमो के लिए जाया करती थी । अपने घर से यही एक घर से बाहर निकली थी, उन दिनों ओरिफ्लेम के ऑफिस में बहुत भीड़ होती थी । शाहीन बताती हैं कि उनके इलाके की अधिकतर महिलाएं, जो मुस्लिम ही हैं , मिल्क एंड हनी के प्रोडक्ट्स ज्यादा पसंद करती हैं | ये नेचुरल प्रोडक्ट हैं, इसके सोप और क्रीम आते हैं और ये महिलाएं नेचुरल चीज़ों से बने सौदर्य-प्रसाधनों (कास्मेटिक) को अधिक पसंद करतीं हैं | शाहीन जी बताती हैं कि जो काम उन्होंने किया हैं, उसमे उन्होंने अच्छी आमदनी कमायी हैं।

फील्ड वर्क के दौरान हम **सुहासना सफ़ीना** बुटीक पर गये | इस बुटीक की मालकिन का नाम **सफ़ीना जिनकी उम्र** 35 वर्ष की है । ये मूलत: बिहार के भागलपुर से हैं | वह नौ साल से अपना बुटीक सम्भाल रही है। यह इनका अपना काम है । इनकी आमदनी 1.25 लाख प्रति माह है। इनकी रोजाना की आमदनी होती है। **चांदनी चौक** में **चितली कब्र** के व्होलसेलर्स से यह अपना रॉ मटेरियल लेती है जिसका इस्तेमाल वह खूबसूरत परिधानों को बनाने में करती हैँ । साथ ही वे अपना कपडे सिलने का बुटीक़ सफलतापूर्वक चला रही है ।

गली-ए-कासिम जान के बल्लीमारान क्षेत्र की **महविश** अपने खुद के पार्लर के काम को शुरू करने के लिए जावेद अकादमी और शहनाज़ हुसैन के हुनरमंद सौन्दर्य-विशेषज्ञों से लिए ट्रेनिंग ली थी । महविश बताती है कि उनका काम में अनुभव अच्छा रहा है, उनके पास अछि संख्या में कस्टमर्स आते हैं। शुरुआत में कम कस्टमर्स थे लेकिन धीरे धीरे पब्लिसिटी होती गई और काम बढ़ा, जिन्हें काम अच्छा लगा और उनकी संख्या में बढ़ोत्तरी होती गयी | लॉकडाउन के दौरान काम में परेशानी हुई। वे बताती है कि कोरोना ने लोगों के दिल में एक डर बिठा दिया है, लोग

मानते हैं कि सैलून जाने से कोरोना का खतरा है। महविश लड़कियों को मुफ्त में ट्रेनिंग भी देती हैं, जिनमें से कई लड़कियां काम सीख कर अपना काम भी कर रही है। वे बताती है कि ज्यादातर मुस्लिम महिलाएं कस्टमर्स हैं और वे आस पास उन्हीं के इलाके से आती हैं । कस्टमर्स फेशियल, बालों का ट्रीटमेंट, मेनीक्योर, पैडीक्योर के लिए आतें हैं । महविश का मानना हैं कि अगर इंसान के अंदर हुनर है तो उस हुनर के साथ आगे बढ़ना चाहिये । वे चाहतीं है कि किसी और अच्छी जगह अपने काम को आगे बढ़ाए, अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती है । आस पास के सभी लोग महविश को जानते हैं । उनका मानना है कि लड़कियों के ऊपर बंदिशे नहीं लगानी चाहिए, उन्हें वे जो करना चाहे उसके लिए उनके पैरेंट्स को सपोर्ट करना चाहिए । वे मानती है कि हाथों में हुनर होना चाहिए इसलिए वे अपनी बेटी को भी यह काम सीखने के लिए तो प्रोत्साहित करती ही रहती हैं अपर वे उसके उस सपने को भी पूरा करने में उसका पूरा साथ देतीं हैं जो हेल्थ-केयर से सम्बंधित है । वे बताती है कि पहनने-ओढ़ने को लेकर उनके ऊपर कभी कोई बंदिशे नहीं रहीं हैं ।

यही पर हमारी मुलाक़ात शबाना जी से हुई | **शबाना** का काम **स्टोन वर्क** और **डाई** का काम है | वह सूट ओर दुपट्टे पर स्टोन लगाती है | अपने इस काम के ज़रिये इन्हें महीने में लगभग रु.3000 तक की आमदनी हो जाती है । लॉकडॉउन के दौरान इनके काम में काफी परेशानियां आई हैं क्योंकि जिस काम को ये करती हैं उसका उत्पाद अक्सर शादी-ब्याह आदि उत्सवों में पहने जाने वाले परिधानों से सम्बंधित है | इन्होने यह काम उन्हीं से सीखा जहाँ वे श्रमिक के रूप में काम करती हैं | यद्यपि उन्होंने इनसे सीखने का कोई चार्ज नहीं लिए तथापि इनका

मेहनताना काफी कम है | एक पीस पर स्टोन वर्क करने में लगभग 5 मिनट का समय लगता हैं | इसमें मेहनत लगती है फिर भी इन्हें एक पीस के केवल तीन रूपए ही मिलते हैं । एक दिन में लगभग 600 पीस बना लेती हैं | एक बार में 400 से 600 तक ऑर्डर आ जाता हैं | बेहद धैर्यवान और मेहनती शबाना चाहती हैं कि कोई ऐसा काम मिले जो किसी स्कूल या कॉलेज से जुड़ा हुआ हो और जिसमें उनकी आमदनी और भी अच्छी हो सके जिससे वे अपने सभी बच्चों जिनमें से एक गोद ली हुई बच्ची भी है, का पालन-पोषण ढंग से कर सकें |

टेलरिंग का काम करने वाली **सबीना** लॉकडाउन से पहले एक मॉल में कपड़े फिटिंग का काम कर रही थी यह काम करते हुए उसे डेढ़ साल से अधिक समय हो गया था इस काम से उसे मासिक वेतन रु.8000 तक मिल जाता था | लॉकडाउन के कारण उसे यह जॉब छोडना पड़ा वह अब अपने घर से ही सिलाई का काम कर रही है | आस-पड़ोस के इलाकों से ही ऑर्डर आने के कारण अधिक आय नहीं हो पा रही है इसलिए वह भविष्य में अपना सिलाई का दुकान खोलना चाहती है |

चुनौतियाँ

स्वायत्तता का अधिकार आदि

सफ़ीना की जल्दी शादी हो जाने की वजह से इन्हे फैशन डिजाइनिंग करने में भी दिक्कते आयी जैसे इनको परिवार को संभालना और अपनी एक बेटी को संभालना और उसे स्कूल छोड़ना फिर खुद कॉलेज जाना और साथ ही साथ सभी घरेलू जिम्मेदारियों का भी वहन करना होता था । एक सकारात्मक पक्ष सफीना के केस में यह देखने को मिला कि इनके पति इनके सबसे बड़े सहायक थे | उन्होंने इनकी हर तरह से मदद की | फैशन डिजाइनिंग कोर्स के लिए इनके भाई एवं ससुर ने भी आर्थिक रूप से मदद की थी । बुटीक के काम के लिए अपने परिवार वालों का पूरा सहयोग इन्हें मिला, चाहे मायके पक्ष से हो या ससुराल से | सफीना इन रिश्तों को पूरा मान-सम्मान देती हैं इसलिए इनका इनका मानना है कि महिलाओ को परिवार के साथ चलकर एक दायरे में रहकर आगे बढ़ना चाहिए । इसलिए जब बात पूर्ण स्वायत्तता की आती हैं तो यहाँ इन्होने अपनी मर्जी से कुछ विशेष निर्णय लेने के अधिकार अपने परिवार जन पर ही छोड़े हैं |

शबाना ने दसवीं तक पढ़ाई की हैं । स्कूल में पढ़ाने के लिए कोशिश की थी, एक क्रिश्चियन कॉलेज में नौकरी मिल गई थी लेकिन बच्चे छोटे होने के कारण उनको उसे छोड़ना पड़ा । अभी कोई अवसर मिलने पर, वे अवश्य उसे करना चाहतीं हैं । वह अपने घर दिल्ली-6 से काम के अलावा बस दिल्ली से बाहर एक बार पाकिस्तान के लाहौर में गई हैं । इनकी पति की मृत्यु के पश्चात शबाना अपने परिवार के दायित्व का निर्वाह कर रही है | उनके आर्थिक चुनौतियों के बाद भी उन्होने न केवल तीन बच्चों को पढ़ाया लिखाया बल्कि एक लड़की को गोद लेकर उसके पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ली | उनको स्टोन वर्क के वजह से शारीरिक तकलीफ़ें जैसे आँख दर्द और देर तक झुके रहने की वजह से कमर दर्द एवं गर्दन दर्द आदि |

शाहीन शाहीन ने जब काम शुरू किया था तब उन्हें लगातार मीटिंग्स में ओखला और दिल्ली के अन्य क्षेत्रों में जाना पड़ता था | कभी-कभार वहाँ से लौटने में देर भी हो जाती थी जिस पर उन्हें अपने परिवार की राय के अनुसार ही चलना पड़ता था | अभी लॉकडाउन के वक्त काम उतना नहीं चल रहा हैं, सब ऑनलाइन हो जाने की वजह से दिक्कतें आती हैं। ज्यादातर 20% छूट पर प्रोडक्ट देती है, mrp वाले बहुत कम हैं। इन्होंने शुरू में कपडे और मसालें भी बेचे हैं । शाहीन

ने हामारी मुलाक़ात अपने बहन और भाई के परिवार से भी करवाई जो वही पर कुछ दूरी में रहते हैं | हमें यह जानकर काफी अच्छा लगा कि इनकी भाभी बरीरा और सभी स्त्रियाँ आमदनी के ज़रिये के लिए कुछ न कुछ काम करने के लिए बहुत उत्साहित दिखी | विशेष रूप से ये सभी बहुत ही उम्दा बावर्ची का काम जानती हैं और किसी पार्टी या उत्सव 100-200 लोगों के लिए खाना बनाने का काम करना चाहती हैं |

सबीना के सामने मुख्य चुनौती सीखने के श्रोत का अभाव था वह बताती है की उसके आस पास सीखने का औपचारिक संस्थान नहीं था उसे एक छोटे सरकारी संस्थान समविकास से सिलाई की बेसिक चीजे सीखी आगे सिलाई सीखने में उसे चुनौती का सामना करना पड़ा |

जब हम चावड़ी बाज़ार के स्टेशन पर अपनी टीम के एक सदस्य का इंतज़ार कर रहे थे तो हमें वहां हमारे ही जैसी दो मुस्लिम लडकियाँ मिली जो दिल्ली विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर एक सेंट्रल स्कूल में टीचर के पद हेतु इंटरव्यू देकर लौटी थीं | बातों-बातों में उनसे पता चला कि वे भी लाल-कुआँ (राबिया स्कूल) के पास की रहने वाली हैं | उनमें से एक की माँ **शाहिदा** तो बहुत ही कठिन परिस्थितियों में टेलरिंग का काम कर रही हैं | इनकी उम्र 50 साल है और इनके घर में कुल 5 सदस्य है | एक महीने में ये लगभग रु.2000 कमा लेती हैं | इन्हें दस से पंद्रह सूट महीने में मिल जाता हैं | कभी-कभी कुछ पड़ोसी और जानकार इनसे मुफ्त में ही अपना काम करवा लेते हैं | इस काम को करने के लिए उन्हें घर से कोई ख़ास सहायता नहीं

मिलती | इनकी बेटी ने यह भी बताया कि जहा ये काम करती हैं वह बहुत ही तंग इलाका है जहाँ पर बामुश्किल सूरज की रौशनी पहुँच पाती है | दूसरी के घर में ब्यूटीपार्लर का काम हो रहा है जिसका नाम '**साहिबा ब्यूटीपार्लर'** है और जो 'गली चाबुक सवार' में स्थित है | इनका यह काम बड़े ही सुभीते से चल रहा है | वक़्त की कमी की वजह से हम यहाँ नहीं जा पाए |

निष्कर्ष

इस प्रकार दिल्ली-6 में रहने वाली मुस्लिम महिलाओं के उद्यमशीलता पर केन्द्रित इस रिसर्च कार्य में इन महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक , पारिवारिक और सांस्कृतिक आयामों को समझते हुए उनके आय के स्रोतों और स्वरुप के साथ-साथ उनकी जीवन शैली को भी जानने के प्रयास के परिणामस्वरूप हमें निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए | इस अध्ययन का आधार मुस्लिम एवं अन्य कामकाजी महिलाओं के संबंध में पहले से किये गए शोध कार्य और विश्लेषण, इन महिलाओं की परिवेश की विशेषताएं, इनके व्यवसाय का प्रकार और उसकी विशेषताएं तथा इनके कार्य में आने वाली चुनौतियाँ रहा, जिस पर किए गए अध्ययन से हमें महत्त्वपूर्ण तथ्यपरक जानकारी हासिल हुई |

दिल्ली-6 का चांदनी चौक और चावडी बाज़ार आदि इस शहर के सबसे पुराना और सबसे व्यस्त क्षेत्र है । यह भूमि सामाजिक , सांस्कृतिक आजीविका का संगम क्षेत्र हैं । यह क्षेत्र मुख्यत: बाज़ारों का है | इन बाजारों में सड़क विक्रेता और साप्ताहिक बाज़ार देखने को मिल जाते है जो कि आय के प्रमुख स्रोतों में से एक हैं और मुस्लिम महिलाओं के आय के स्रोत भी इन्ही में से कुछ होते हैं । मुस्लिम समाज के विषय में आमतौर पर कुछ धारणाएं बना ली जाती हैं, खाकर यहाँ की महिलाओं को ले कर उनकी सोच संकीर्ण होती है, लेकिन इस शोध कार्य को करने में फील्ड वर्क के जरिए, जिसमें इन महिलाओं से रूबरू होते ही मानो बहुत-सी धारणाएं टूटती हुई दिखती हैं कुछ पूर्वाग्रह ख़त्म हुए हैं । यहाँ की महिलाएं अपने-अपने क्षेत्र की उद्यमशीलता में बहुत हद तक आत्मनिर्भर है उनमें से कुछ तो पूरे घर का सारा खर्च खुद ही उठाती हैं । शबाना जी जैसी महिलाएं अपने घर का सारा खर्च उठाते हुए अपने बच्चों का पालन पोषण करने के साथ-साथ एक अनाथ बच्ची की ज़िम्मेदारी भी उठा रही हैं | शबाना अपने आप में इंसानियत की उम्दा मिसाल हैं |

महविश के ऊपर पहनने-ओढ़ने के लिए कोई रोक-टोक नहीं हैं । वे अपने पसंद से कोई भी कपड़े पहन सकती हैं, इनके ऊपर बुर्का पहनने के लिए कोई दबाव नहीं हैं ।

यहाँ की महिलाओं को परिवार से इनके काम के लिए बहुत साथ मिलता है और परिवार की मदद से ये अपना काम अच्छी तरह से कर रही हैं । इनकी सोच अपनी बेटियों को ले कर भी संकुचित नहीं हैं और सभी अपने बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार शिक्षा दे रहे हैं ।

हमें इस प्रोजेक्ट पर काम कर के बहुत अच्छा लगा । इस प्रोजेक्ट के लिए काम करते हुए काफी नई चीजे सीखीं । पहले मुस्लिम महिलाओं को लेकर कुछ ही चीज़ों की जानकारी थी । हमने वहाँ जाना कि दिल्ली -6 की मुस्लिम महिलाओं की समाज में भागीदारी किस प्रकार रहती है । मुस्लिम महिलाओं के तौर-तरीके, रहन-सहन और घर में उनको कितना महत्त्व मिलता है, हमें यह भी पता चला । साथ ही यह भी जाना कि उनके परिवार में उतनी बन्दिशे नहीं है जितना हमें सामान्य रूप से पता है या जितना धारावाहिक सीरियल से दिखाये जाते है । जैसे, वह घर से निकल सकती है एवं बुर्का पहनना और न पहनना उनका विकल्प है, उनकी अपनी मर्जी है । उन्हें पढ़ने-लिखने या किसी भी काम को करने की उतनी ही छूट है जैसे कि किसी अन्य महिला को | पुरानी दिल्ली के मुसलमान खानदान लगभग एक शताब्दी से भी अधिक समय से यहाँ रह रहे हैं | अधिकांशत: हमने यह पाया कि उनके सपने पूरे करने में उनका परिवार उनका पूरा साथ देता है | उनसे बात-चीत एक दौरान हमें यह भी पता चला कि उनके परिवार के लोग सन 1914 ई. से इसी बल्लीमारान में रह रहें हैं | इस इलाके में एक अलग ही तरह की व्यवस्था थी जो बेहद भीड़-भाड़ के होने के बावजूद महिलाओं के लिए महफूज़ लगी | हम सभी लड़कियां उस अपरिचित जगह पर गए पर ऐसा लगा ही नहीं कि पहली बार आयें हों | इन महिलाओं के व्यक्तित्व में एक विशेष आत्माभिमान और स्वावलंबन है | मुस्लिम महिलाओं के बारे में जो बातें हम पहले-से जानते थे या किसी के द्वारा बताई गयी बातों के आधार पर हमारे दिमाग में मुस्लिम महिलाओं की जो छवि थी, जैसे, वह पति के नीचे ज्यादा दबकर रहती है, उनको बुर्का पहनना जरूरी है और वह घर के बाहर नही निकल सकती | पढ़ने नही जा सकती है और परिवार उन्हें महत्त्व नही देता आदि सभी इस परियोजना कार्य को करने के बाद बदल गईं । अब तक हमने इनके बारे में केवल धारावाहिक या फिल्मों से या किसी घट्न कि खबर से ही पता चलता था लेकिन अब उनसे बात करके उस पुराने दायरे को छोडकर प्रोजेक्ट

करते समय एक नया और वास्तविक स्वरुप देखा जो अपने-आप में बहुत ख़ास है | इन महिलाओं के ज़रिये हमें कई और भी उद्यमशील महिलाओं के विषय में पता चला लेकिन वक़्त के तकाज़े के कारण उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकी पर इतना ज़रूर समझ में आया कि इस इलाके की मुस्लिम महिलाओं की उद्यमशीलता मूलत: सिलाई-कढाई और ब्यूटीपार्लर जैसे कार्यों को लेकर चल रही है | अधिकतर संयुक्त परिवारों में रहने वाली ये महिलाएं न केवल अपने हुनर का इस्तेमाल करते हुए अपनी काबिलियत को सिद्ध कर रहीं हैं बल्कि अपने साथ परिवार की और अपने जान-पहचान की स्त्रियों की भी सहायता कर रही हैं

सन्दर्भ :-

1.GENERAL READINGS 1. Sameera Khan. “Negotiating the Mohalla: Exclusion, Identity and Muslim Women in Mumbai.

2.Economic and Political Weekly, vol. 42, no. 17, 2007, pp. 15271533. JSTOR, www.jstor.org/stable/4419519. Accessed 21 Jan. 2021. (Just for understanding the dynamics of Mohallas, identity constructions around Muslim Women)https://www.jstor.org/stable/4419519?seq=12

3.Sharma, Sonal, and Eesha Kunduri. "Working from home is better than going out to the factories: Spatial Embeddedness, Agency and Labour-Market Decisions of Women in the City of Delhi." South Asia Multidisciplinary Academic Journal (2015). https://journals.openedition.org/samaj/3977

#. BISWAS, OLIVIA. "A HEART CITY: CELEBRATINGTHE PULSATING LIFESTYLES OF THE WALLED CITY OF DELHI." 2018 WEI:

111. https://www.westeastinstitute.com/wp-content/uploads/2019/01/EDU-NIAGARA-FALLS-2018.pdf#page=112(general references on the Delhi and lifestyle around the city life, to situate the women socio- economic and political way into the City life)

4.Sinha, Shalini. Rights of home-based workers. National Human Rights Commission, 2006.(used to develop a basic understanding)

5.Chakraborty, Shiney. "COVID-19 and Women Informal Sector Workers in India." Economic & Political Weekly 55.35 (2020): 17. (Just refer to

understanding the Informal and Formal work divide also refer to the facets here how work is contextualized in the space.

6.https://www.epw.in/engage/article/impact-lockdown-relief-measures-informal-enterprises-workers

7. Sekhani, Richa, Deepanshu Mohan, and Sanjana Medipally. "Street vending in urban informal markets: Reflections from casestudies of street vendors in Delhi (India) and Phnom Penh City (Cambodia)." Cities 89 (2019): 120-129.For Methodology Wittmer, Josie. "We live and we do this work: Women waste pickers experiences of wellbeing in Ahmedabad, India." World Development (2020): 105253. Reinharz, Shulamit, and Lynn Davidman. Feminist methods in social research. Oxford University Press, 1992.

-WEB SOURCES NEWS-ARTCILES, PODCASTS, PHOTO- EXHIBITIONS The entire articles can be then and there translated via using a Google translator and to understand basics of research project:

1.https://www.wiego.org/blog/photo-essay-part-i-home-place-work

2.https://www.newindianexpress.com/cities/delhi/2020/apr/17/daily-wagers-evicted-from-chandni-chowk-2131292.html

3.https://www.newindianexpress.com/thesundaystandard/2020/may/31/lockdown-impact-delhis-chandni-chowk-project-hit-bylabour-shortage-2150143.html

4.https://www.wiego.org/resources/myths-facts-about-home-based-workers

5.https://thewire.in/women/women-informal-workers-lockdown

6.https://indianexpress.com/article/cities/delhi/chandni-chowk-redevelopment-coronavirus-lockdown-6578086/

7.https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1669947,

8.https://deshbandhu-mp.com/201203/pdf/jp04.pdf

9.https://blog.sharemystore.com/hi/%E0%A4%9B%E0%A5%8B%E0%A4%9F%E0%A5%87-%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B0-%E0%A4%95%E0%A5%87%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%8F-%E0%A4%AC%E0%A5%80%E0%A4%AE%E0%A4%BE/छोटेव्यापारके लिएबीमा

#Also, some YouTube links can also be considered:

10.https://youtu.be/qhpbbAhezsk

परिशिष्ट-1 : प्रश्नावली

अपने क्षेत्र-कार्य के दौरान हमने उद्यमशील महिलाओं से इन प्रश्नों की संक्षिप्त रूपरेखा बनायी | इसके अतिरिक्त हमने कई प्रश्न उनके द्वारा बतायी जाने वाली जानकारी के आधार पर भी पूछे |

1. Name:

आपका नाम क्या हैं?

2.Age:

आपकी उम्र क्या हैं?

3. Age when started working :

आपने कौन सी उम्र में काम करना शुरू कर दिया था?

4.Educational qualificaton:

आप कहां तक पढ़ी हैं?

5.Marital Status:

क्या आपकी शादी हो चुकी हैं?

6.Number of Children if any :

क्या आपके बच्चे हैं ? कितने?

7. City do you belong from:

आप किस प्रदेश/शहर से हैं?

8.Area of work:

आप कहां काम करते हैं?

9.Nature of work:

फैक्ट्री में काम करते है या घर से काम करते हैं?

10.Monthly Income:

आपके काम से महीने में आपको कितना रुपए मिल जाता हैं?

11.Work Environment:

आप जहां काम करतीं हैं, वहां के आस- पास का माहौल कैसा हैं?

12.अपने काम के बारें में अच्छे से बताए?

14.आपकी मुस्लिम औरतों के लिए क्या विचार हैं?

परिशिष्ट-2 : क्षेत्र कार्य के दौरान ली गईं कुछ यादगार तस्वीरें

Lift
Women Only

2021

MACHO
LIRA
Extra Care
Care 4

یادگارِ غالب
ग़ालिब स्मारक
GHALIB MEMORIAL

اگ رہا ہے درو دیوار سے سبزہ غالب
ہم بیاباں میں ہیں اور گھر میں بہار آئی ہے
उग रहा दर-ओ-दीवार पे सब्ज़ा ग़ालिब
हम बयाबां में हैं और घर में बहार आई है

Indian Council for Cultural Relations
and
Government of Delhi
Presents
An Exhibition cum Museum on
"Life and times of Mirza Ghalib."
Ghalib's Haveli at Mir Qasim Jaan Gali
Ballimaran, Chandni Chowk
Delhi-110006
Inauguration
on
27th December, 2011
Acknowledgment & credits for contribution-
Ghalib Academy
Aiwan-e-Ghalib
Museum Designed by
SHOW CRAFT
Showcraft Productions Pvt. Ltd
DESCRIPTION
Profession
Place, district and State of birth
Date of Birth
Domicile
Height
Colour of Eyes
Colour of Hair
Visible Distinguishing Marks
बच्चे – CHILDREN
Name
Date of Birth
Sex
PHOTOGRAPH OF BEARER